जो जो देखी वीतराग ने....

(कविवर पण्डितश्री भैय्याजी)

जो-जो देखी वीतराग ने, सो-सो होसी वीरा रे,
बिन देख्यो होसो नहीं क्यों हो काहे होत अधीरा रे ॥1॥

समयो अक बढ़ै नहिं घटसी, जो सुख-दुःख की पीरा रे,
तू क्यों सोच करै मन कूड़ो[1], होय वज्र ज्यों हीरा रे ॥2॥

लगै न तीर कमान बान कहूँ, मार सके नहिं मीरा रे,
तूँ सम्हारि पौरुष-बल अपनौ, सुख अनन्त तो तीरा रे ॥3॥

निश्चय ध्यान धरहू वा प्रभु, को जो टारे भव की भीरा[2] रे,
'भैय्या' चेत धरम निज अपनो, जो तारे भवनीरा रे ॥4॥

---

१. मूरख; २. भय